वसंत वैली

सितम्बर 2011 TODAY

हिंदी दिवस क्यों!

"राजभाषा का हमेशा सम्मान होना चाहिए मातृभाषा का सदा उचित सम्मान होना चाहिए।"

इसी तरह की लोकोक्तियाँ वर्ष **14** सितम्बर की सुबह के आरंभ होने पर कई लोग गुनगुनाते हैं। कई विद्यालयों, कॉलेजों, सरकारी दफ्तरों व यहाँ–वहाँ की संस्थाओं में सभी व्यक्ति किसी न किसी तरह से अपने देश की राष्ट्रभाषा के सौंदर्य, हमें संगठित रखने में हिंदी की सफलता व उसकी प्राचीनता का जश्न मनाने के साथ उसे एक तरह से सम्मनित भी करते हैं! आज हिंदी दिवस है, आज इस उत्तेजना को भला कौन रोक सकता है? और रोके भी क्यों? आज हिंदी दिवस है... आज अवसर है अपनी पहचान, अपनी मातृभाषा व उसके प्रयोग से प्राप्त होने वाली गरिमा को दर्शाने का अवसर है। तो क्यों मनाते हैं हम यह अवसर? क्या किसी भाषा की उपादेयता को सिद्ध करने के लिए यह दिवस निर्धारित किया गया है? कैसे मूर्ख हैं हम भारतीय! न जाने किन–किन अचेत निष्पादनों की सफलता को मनाते रहते हैं। पहले हिंदी दिवस फिर मातृ दिवस और फिर न जाने और कौन कौन से दिवस? निजी उपलब्धि का दिवस!! हिंदी तो प्राचीन भाषा है...तो फिर उसका जन्म दिवस मनाने की आवश्यकता क्या है? इन बातों को सोच–सोच कर मुझे यकीन होता जा रहा है कि 'हिंदी दिवस' भी आधुनिक भारतीय संस्कृति की चारित्रिक विशेषता, यानि की अटल दिखावे की रचना थी।

किंतु, कक्षा 6 में हिंदी भाषा के विभिन्न पक्षों व उनकी परिभाषाओं को रटते–रटते हमें यह पता चला कि हिंदी दिवस भारतीयों के द्वारा दुनिया के सामने किसी नुमाइश का सबूत नहीं, बल्कि हमारी संस्था, हमारे देश, व हमारे पुनर्विचारों का सबूत है। इसके पीछे बड़ा ही तर्क सहित कारण है जो भारत की विभिन्नता व उसकी अपूर्वता को और भी विशाल बनाता है। **12** सितंबर, **1949** के दिन के **4:00** बजे संविधान सभा में एक बहस शुरू हुई। क्या हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का स्तर दिया जाए? क्या उस देश में, जहाँ हर दो कदम पर एक नई भाषा का प्रयोग होता है वहाँ हिंदी को सर्वोपरि स्थान दिया जाए? क्या विभाजन से पीड़ित इस देश में हिंदी, जो कि देश के सिर्फ उत्तरी भाग में प्रचलित है, उसकी स्थापना करना उचित होगा? क्या भारत इस निर्णय के पश्चात भारत बन कर रहेगा या कोई और रूप धारण कर लेगा? बहस करते करते, आखिरकार **14** सितम्बर, **1949** की दोपहर को यह घोषित किया गया कि भारतीय संस्था के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी हमारी राष्ट्रीय भाषा है। यह घोषणा तो ठीक है। किंतु मेरा प्रश्न यह है कि जिस प्रकार हम हिंदी दिवस मनाते है, क्या कोई और देश अपनी भाषाओं के नाम पर कोई दिवस मनाता है? क्या सुना है कभी आपने उर्दू या इंग्लिश दिवस? क्या प्रचलित है मंदारिन या फ्रेंच सप्ताह? नहीं... तो ऐसा क्यों की भारतियों ने एक मामूली घटना को इतनी अहमियत दी? नहीं, मेरे अनुसार, भारत जैसे बहुभाषी देश में जहाँ अनगिनत भाषाओं की अनगिनत उपभाषाएँ हैं, हिंदी एक संगठित अंश के समान है। हाँ, कई भारतीय अब भी हिंदी का प्रयोग पूरी तरह नहीं करते, किंतु हिंदी हमारी पहचान है। 'भारतीय' शब्द की स्वरूपता हिंदी से होती है। हम चाहे कश्मीर की वादियों में हों या मुंबई के समुद्र तटों पर, दिल्ली की सड़कों पर हों या राजस्थान के रेगिस्तान में...हिंदी हमें एक करती है। हमें हमारी भारतीय होने की पहचान देती है।

ऐसी अनूठी शक्ति क्या किसी और भाषा में पाई जाती है? क्या कोई और भाषा किसी और देश में ऐसा जादू फैलाती है? यह एक दिन हिंदी की याद को हमारे मन में उजागर करता है, और उसके लावण्य का हमें अहसास दिलाता है। इस कारण से भारत अपनी इस पहचान, इस भाषा, इस आवाज़ और अपने सबसे प्रधान अंश को आज के एक दिन खुल कर, गौरव से और संयुक्त होकर निहारता है,और इसी शानदार अभ्यास के माध्यम से इस महान भाषा की शक्ति और रोशनी भारत के एक–एक अंधियारे कोने तक पहुँचती है, और प्रत्येक भारतीय में भारतीय होने का अहसास उजागर करती है।

शरन्या ठाकुर 10

स्कूल वॉच

वी वी एस के निम्न छात्रों को 'मोजार्ट कॉयर ऑफ इंडिया' एक गैर लाभ परियोजना जो कि ऑस्ट्रिया दूतावास नई दिल्ली ह्यूंग जून चांग द्वारा आयोजित की गई में सदस्यों के रूप में शामिल किया गया–प्रियम डेका, काम्या शर्मा, सुविया असद तथा अर्शया हरीश।

कुल **17** स्कूलों ने वी वी एस अंर्तविद्यालयी मल्टीमीडिया प्रतियोगिता में भाग लियाः निष्क्रिय इच्छामृत्युः एक वांछनीय समाधान। इसमें वसंत वैली स्कूल टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया–अमीरा सिंह, वानी मोहिन्द्रा, उर्वी रघुवीर एवं अभिनव राय।

सुमना डालमिया तथा आन्या प्रिया डालमिया ने एन सी आर अंर्त विद्यालयी टेबल टेनिस चैम्पयनशिप में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

वसंत वैली स्कूल की उप जूनियर बॉस्किटबॉल की लड़कियों की टीम ने दक्षिण–पश्चिम स्कूल बॉस्किटबॉल टूर्नामेंट डी पी एस वसंत कुंज से **32–4** के स्कोर से जीता।

सिद्धात नाथ,नमन मिश्रा एवं अंगद सिंह ने प्रतीक सेठी,जैसल सिंह एवं अनुव्रत मुंजाल के साथ फुटबॉल राज्य विशेष ओलंपिक दिल्ली,भारत द्वारा आयोजित मैच जीता। अंतिम मैच **4–0** (एयर फोर्स गोल्डन जुबली स्कूल के खिलाफ) और **3–0** (अक्षय प्रतिष्ठान के खिलाफ) जीता।

वसंत वैली टीम के अंकुर चड्ढा और अर्किन खोसला ने 'अल्बट्रोस अंर्तविद्यालयी जूनियर गोल्फ चैम्पयनशिप जो कि जैक निकॉल्स डिसाइन **72** पार, क्लासिक गॉल्फ रिसॉर्ट में आयोजित हुई को जीता।

नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा का नाटक

गुरूवार के दिन, 25 अगस्त, हम कक्षा नौ के छात्रों को सूचना मिली कि उसी दिन हमारे लिए नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के कुछ अभिनेता एवं अभिनेत्रियाँ एक नाटक प्रस्तुत करने जा रहे थे। सभी छात्र इस नाटक को देखने के लिए बड़े बेचैन थे और जब हम जूनियर स्कूल के ए.वी रूम पहुँचे तो हम सभी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के अभिनेताओं ने लाजवाबी से नाटक की प्रस्तुति की। नाटक पडिता रमाबाई के बारे में था जो एक उन्नीसवीं शताब्दी की एक विधवा थीं परंतु उस समय की अधिक महिलाओं से अलग व आज़ाद थीं और उस समय की एक सक्रिय प्रतिभागी थीं। वे महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए छुटपन से ही प्रयत्न करती आ रही थीं। पडिता ने महिलाओ के लिए "मुक्ति" जैसे कई विद्यालय भी खोले। वे पुराने जमाने के ख्यालों से काफी आगे निकल चुकी थीं और अकेली ही इंग्लैंड व अमेरिका चार साल के लिए भी चली गई थीं। इस कहानी को अभिनेताओं ने एक अलग ढ़ंग से ही प्रस्तुत किया। दर्शकों को ऐसा लगा कि हम भी इस नाटक में शामिल थे क्योंकि हम कभी भी नाटक को रोककर प्रश्न पूछ सकते थे! अंत में हम सभी ने अभिनेता एवं अभिनेताओं के लिए जबरदस्त तालियाँ बजाईं। ऐसा लगा कि यह 1/2 घंटे का नाटक कुछ ज्यादा ही जल्दी समाप्त हो गया!

इंद्रनील रोय 9

सी सी ईः मेरी नज़र में

2009 में भारत की माध्यमिक प्रणाली में एक ऐतिहासिक बदलाव आया, प्रयास था कि छात्रों के मानसिक तनाव व उत्कंठा को कम किया जाया।

इस उद्देश्य से, शिक्षा मंत्री, कपिल सिबल द्वारा कानून में संशोधन का प्रस्ताव घोषित रखा गया जिसमें कक्षा दस की बोर्ड परीक्षा (जो पहले सभी छात्रों के लिए अनिवार्य थी) उसे वैकल्पिक कर दिया गया और बोर्ड परीक्षा की जगह, सी सी ई शिक्षा पद्धति ने कदम रखा। इसके अनुसार कक्षा 9 और 10 को चार अर्द्धवार्षिक पाठ्यक्रमों में बाँटा गया, जिनके अंत में छः मास में हुई पढ़ाई से संबंधित परीक्षा का प्रावधान है। इसके साथ ही नियमित आंतरिक आंकलन पर भी सभी विद्यालय ज़ोर दे रहे हैं। किंतु सरकार द्वारा शिक्षा को अधिक सार्थक एवं कम शैक्षिक व किताबी बनाने के प्रयास में क्या वह बच्चों पर और दबाव डाल रहे हैं? क्या वास्तव में 'सी सी ई' शिक्षा में उनके नन्हें कंधों पर बोर्ड परीक्षा से भी अधिक बोझ पड़ रहा है? अधिकतर विद्यार्थियों का यह मानना है कि इस पद्धति ने तनाव कम करना तो छोड़ो बल्कि कई गुना बढ़ा दिया है। हर सप्ताह नए परियोजना कार्य, कक्षा में दिन-ब-दिन बढ़ता काम, अनुपस्थिति से गिरते अंक, आदि। जिस लक्ष्य से यह पूर्णतः आरंभ किया गया था, उसपर यह खरा नहीं उतरा। इस बात से यह साफ हो जाता है कि छात्र मंडल 'सी सी ई' से असंतुष्ट है। नहीं, मैं यह नहीं मानती कि इसका हर पहलू नकारात्मक है। अध्यापकों, छात्रों तथा विद्यालय के सम्मिलित समर्थन से यह पूरी तरह सफल हो सकता है।

वसुधा दीक्षित 10

समुन्दर के चमत्कार क्या आप जनते हैं ः

- प्रवाल भित्तियाँ समुद्र तली वर्षावन कहलाता हैं।
- ओक्टोपस के तीन दिल हैं।
- बिजली मछली 500 वोल्ट का झटका दे सकती हैं।
- कई केकड़े पेड़ पर चढ़ सकते हैं।
- डोलफिन डूबते हुए लोगों को बचाती हैं।
- सी ऐनेमौन मीट खाने वाला समुद्री फूल हैं।
- वाईपर फिश की छाल में रोशनी देने वाली परत होती हैं।
- गलपर फिश अपने से बड़ी मछली को भी निगल सकती हैं।
- स्टार फिश की बाजू को अगर कोई काटे तो वे फिर से उग जाती है।

विवान यागनिक सेतिया 6

हिन्दी बनाम संस्कृत

हमारी मातृभाषा को राष्ट्रीय भाषा का सम्मान प्राप्त है। मगर वह भाषा जिसने हिन्दी को ही जन्म दिया है संस्कृत उसे कैसे भूल सकते हैं। बचपन से जिस दिन से हम पैदा हुए है हम से सब हिन्दी में ही बात करते आ रहे हैं और आज भी जैसे हम बड़े होते जा रहे हैं हमारी बोलचाल की भाषा हिन्दी ही है। हिन्दुस्तानियों के लिए हिन्दी तो खून में बहती है। इतनी सरलता से हम हिन्दी पढ़ लिख और समझ सकते हैं।

दूसरी तरफ संस्कृत एक संगठित और व्यवस्थित भाषा है इसलिए वह आसान है। यह ही नही संस्कृत में ही तो हमारे सारे हिन्दू शास्त्र लिखे गए हैं और यह भाषा इतनी मशहूर हो गई है कि दुनिया के अलग अलग विश्वविद्यालयों मे भी संस्कृत पढ़ने का विकल्प है।

यह कहना उचित नहीं कि हिन्दी संस्कृत से बेहतर भाषा है या संस्कृत हिन्दी से बेहतर भाषा है मगर दोनों ऐसी भाषाएँ है जो एक दूसरे पर निर्भर हैं और किसी भी एक को कम लायक या बुरा कहना गलत बात होगी।

अनन्या जैन 9

स जयति सिन्धुरवदनो देवो यत्पादपङ्कजस्मरणम्।
वासरमणिरिव तमसां राशीन्नाशयति विघ्नानाम्॥

छुट्टियों में कहाँ जाओगे ?

दशहरा दिवाली अथवा क्रिसमस की छुट्टियाँ आ रही हैं लेकिन आप कहाँ जाएँगें ? हमें कोई नयी जगह देखनी है पूरी दुनिया की सैर करनी है। मैं आपको थोड़ी सी जगहें बताऊँगा जहाँ छुट्टियों में जाना बहुत मज़ेदार होगा।

1 पुराने ज़माने की इमारतें
- इजिप्ट के पिरामिड
- ऐक्रोपोलोसिस ग्रीस
- ट""ए टर्की
- शीऑन चीन
- कोलेसियम रोम इटली

2 प्रकृति का जादू
- ऑस्ट्रीया के ऐल्पस
- मों ब्लान पर्वत की सैर
- राजस्थान का रेगिस्थान
- हॉट एयर बैलून में ग्रन्ड कैनियन की सैर
- सेकोईआ सैन्कचूयरी यू एस ए

3 थीम पार्क
- डिसनी लैन्ड़ ऐन्हाईम यू एस ए
- प्ले पार्क न्यू यॉर्क
- लैगौ लैन्ड़ बिलुन्ड डेनमार्क
- लूना पार्क सिडनी
- फिरारी पार्क आबू दावी

4 हाईकिंग
- योसमाईट यू एस ए
- माऊन्ट किलामन्जारो टैन्ज़ेनिया
- माऊन्ट फूजी जापान
- हिमालय भारत भूटान और नेपाल
- स्वस ऐल्पस स्वीडसरलैन्ड

5 सफ़ारी
- क्रूगर नेशनल पार्क दक्षिण अफ्रीका
- किलामन्जारो पार्क टैन्ज़ेनिया
- येलो स्टोन पार्क यू एस ए
- रणथंभोर पार्क भारत
- वोलोंग रिसर्व के पैन्डा सिचूआन चीन

यह सब स्थान सुनने में अच्छे लगते हैंपर जाने का मज़ा ही कुछ और है। चलो छुट्टियों के लिए सोचना शुरू करें।

आदित्य कपूर 6

अंधकार में होती आतंकवादी गतिविधियाँ

गरीब, अशिक्षित व आर्थिक रूप से वंचित, निर्दोष लोगों,
के मन में फैलाया जाता है अंधकार हर ओर।
जगाकर एक स्वतंत्र राष्ट्र का सपना,
उनको गलत दिशा में किया जाता है गुमराह।
इन सपनों में खोए यह बेगुनाह लोग,
वार मार में किए जाते है उपयोग।
हाथों में हथियार पकड़,
न जाने क्या कर बैठते हैं लड़-लड़कर।
मगर कब तक लगेंगे लोगों के जिस्म पर जख्म गहरे?
कब तक आज़ाद घूमेंगे दुश्मन, दोस्तों के ही भेस में?
कब तक डरेंगे हम केवल घर से निकलने से?
कब तक बैठे रहेंगे हम बिना कुछ बोले?
अब बंद करो यह खून की होली,
वापस करो वह खुशी और मुस्कुराहट की टोली।
भड़क उठी है ज्वाला, अब खैर नहीं आतंकवाद की,
मगर किसकी है गल्ती गुमराह आतंकवादी या बेकसूर शहीद की?

आस्था कामरा 10

अन्ना हज़ारे और भ्रष्टाचार

होगा अब लोकपाल बिल पास,
फ़िर होगा भारत का विकास।
हार जाऐंगे सब भ्रष्टाचार करने वाले,
जीत जाएगें हमारे अन्ना हज़ारे।
खत्म होगा किस्सा उनका जो रहे थे भारत को लूट,
लोकपाल बिल पास होने पर जाएगा अन्ना का अनशन टूट।
बारह दिन के अनशन के बाद,
सरकार ने सुनी अन्ना की बात।
सरकार ने अपना फैसला सुनाया,
भ्रष्टाचार खत्म करने की तरफ एक कदम बढ़ाया।
लोग आए भारत के हर कोने से अनेक,
परंतु मकसद तो सभी का था एक।
लोकपाल बिल पास करवाना है,
भारत को आगे बढ़ाना है।
जय हिंद!!

अग्रिमा राय

भारत रहें स्वस्थ

प्रतिदिन लोग मर रहे हैं,
पर हम उनके लिए क्या कर रहे हैं ?
अस्पताल और डॉक्टरों की है कमी
इलाज यहाँ सबका नहीं है सही।
भारत में सरकार ने की है मदद
जो पहुँचे सरकारी अस्पताल
उनकी अच्छी है किस्मत !
मुफ्त में इलाज तो सभी चाहेंगें
पर हज़ारो लोगों की इच्छा
हम कैसे पूरी कर पाएँगे ?
जब सही खाना और पोषण नहीं मिलेगा
तो गरीबों का हाल और क्या होगा ?
काश इनकी सहायता हम कर पाते
इन्हें भी अपने साथ पाँच सितारा
अस्पताल ले जाते !

हिबा मिर्ज़ा 9

उमड़ते-घुमड़ते बादल

आकाश के यह काले-काले बादल
उमड़ते-घुमड़ते वर्षा करते
चाँद सितारों को छुपाते
हमारी छत बनकर इतराते
वर्षा रानी की सवारी बनकर
बरसते हैं जोर-जोर से दिनभर
रात को बिजली का आकाश पर चमकना
और धरती पर उजाला करना
उमड़-घुमड़ कर बादलों ने बरसना
तेज हवाएँ चल रही हैं
बादलों को इधर-उधर कर रही हैं
बिजली धरती पर गिर रही हैं
और बादल उमड़-घुमड़ के नाच रहे हैं।

दिविज चाँदना 6

मुझे भारतीय होने पर गर्व है

भारत सबसे महान है। भारत में अनेक धर्म, भाषा, राज्य और लोग एक साथ रहते है। विश्व में सबसे पुरानी भाषा, संस्कृत और सबसे पुरानी पुस्तक, वेद, भारत में ही तो है। गॉधी, गीता और गंगा भारत ने ही विश्व को दिए हैं। भारत में बहुत सारे त्योहार मनाए जाते हैं। पूरे विश्व में भारत में ही सबसे पुरानी संस्कृति है। हर राज्य का अपना ज़ायकेदार खाना भी होता है।दुनिया में प्रसिद्ध ताज महल, भारत में ही है। भारत सोने की चिड़िया भी कहलाता था। इसलिए मुझे भारतीय होने पर गर्व है। इतना ही नही भारत पूरे विश्व में सबसे बड़ा लोक तांत्रिक देश है।

आशुतोष त्रिवेदी पॉच – अ

आई एम कलाम

हमारे स्कूल में कक्षा 4 से 8 के बच्चे मूवी आई एम कलाम देखने गये थे। हमारे साथ एक स्कूल और आया था। मैं अपने दो दोस्तों अरमान और युगांश के साथ बैठा था। मैं सीट नम्बर 26 पर बैठा था। हम पिक्चर देखने के लिए वसन्त कौन्टिनैन्टल गए थे। सब लोग उस मूवी को देखकर हँस रहे थे। उस पिक्चर में एक छोटू था जिसने अपना नाम कलाम रख लिया था। वो एक ढाबे में काम करता था।

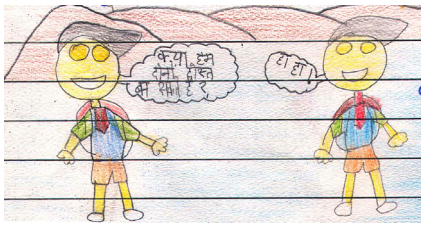

मुझे कलाम की एक्टिंग कमाल की लगी। कलाम ने एक दोस्त बनाया था उसका नाम रण विजय था। उन दोनों ने तय किया था कि तुम मुझे अंग्रेजी सिखाओ और मैं तुम्हें हिन्दी। रण विजय ने कलम की वजह से ट्रॉफी जीती थी। मेरा मन करता है कि मैं मूवी एक बार और देखने जाऊँ।

आर्यमन बंसल चार – स

जब मैं छोटा बच्चा था

जब मैं छोटा बच्चा था
बड़ी शरारत करता था।
मैं बहुत प्यारा था
मैं घोड़े की सवारी करता था।
मैं बहुत खाता था
पर मैं नहीं नहाता था।
जब मैं बाग में जाता था
तब मैं बहुत खेलकरआता था।
जब मैं वापस आता था
मैं आइस्क्रीम खा के आता था।
बहुत लालची होता था
सब का खाना खाता था।

करण ढ़ींगरा 4 ब

अगर मैं पतंग होती

अगर मैं पतंग होती तो क्या लाइफ होती। नील गगन में मैं पक्षियों के संग उड़ती, ठंडी हवा का मज़ा लेती क्या अनुभव होता ! गाड़ियों के शोर और मम्मी की डॉट से दूर, मैं आसमान में छुट्टियाँ मना रही होती। 15 अगस्त को तो मेरी शोभा और भी बढ़ जाती सुंदर और रंग - बिरंगी, आज़ाद, मेरी ज़िन्दगी ही बदल जाती।मैं वहाँ अद्भुत नज़ारों का आनंद उठाती। मेरी डोर कटने पर मुझे बहुत दुख होता। पर इतना ऊँचा उड़ने में बड़ा मज़ा आता। लाइफ हो तो ऐसी ! बच्चों व बड़े में सबकी दुलारी होती। भगवान करें मैं अगले जन्म में पतंग बनूँ।

प्रियम डेका पॉच –स

अरे सूरज

अरे सूरज चाचा
क्यों फैलाते हो इतनी गर्मी।
ना तो मुझे खेलने देते,
ना ही पढ़ने देते।
करते हो कुछ अच्छे काम,
स्कूल जल्दी से बंद कर दिया।
ना मम्मी कहती होमवर्क करो,
ना पापा की सुननी पड़ती डॉट।
तरण ताल में तैरता हूँ मैं
खाता साथ में आइस कीम,
पर फिर भी गर्मी इतनी दिन भर,
सूरज चाचा !!
मारने का चक्कर है क्या ?

भव्य मित्रा चार – अ

जादुई लकड़ी

एक दिन 3 लड़के समुद्र के किनारे खेलने गए।एक लड़के को एक डण्डी मिली और उसने उससे अपना नाम रेत पर लिखा।जब वो नाम लिख रहा था उसको एक सोने का सिक्का मिला। वह बोला वाह! मैं तो अमीर हो गया। दूसरे लड़के ने भी लकड़ी से अपना नाम लिखा। उसे एक जादुई कलम मिली।तीसरे लड़के ने भी अपना नाम रेत पर लिखा। उसी समय एक लहर आई और अपने साथ एक बोतल लाई जिसमें एक जिन्न था। दूसरे लड़के की जादुई कलम उसकी सारी बातें अपने आप लिखती गई। तीसरे लड़के के जिन्न ने उसकी एक इच्छा पूरी की। वो महल में रहने लगा।जो कुछ भी लड़का माँगता था उसे मिलता गया।सबके लिए समुद्र के किनारे जाना अच्छा रहा।

सामूहिक कहानी रचना एक – ब

मेरा बचपन

जाने क्यों याद आ रहा है वो बचपन सुहाना, मम्मी का अपने हाथ से खाना खिलाना।

मुझे याद है मैं अपनी मम्मी को बहुत परेशान करती थी। जैसे ही खाने का वक्त होता था, चूँ चूँ शुरू हो जाती थी। एक ही तरफ खाना मेरे मुहँ में रखा रहता था। घंटो मेरी माँ उस एक रोटी को खत्म कराने का प्रयास करती थी।

जाने क्यों याद आ रहा है वो बचपन सुहाना, पापा का वो कंधा और उनका झूला झूलाना।

मुझे सुबह से शाम तक अपने पापा के आने का इन्तज़ार रहता था। जैसे है वे आफिस से आते थे, मुझे ऊपर नीचे हवा में फेंकते थे। मैं ज़ोर - ज़ोर से हँसती और वो मुझको गुदगुदाते।

जाने क्यों याद आ रहा है वो बचपन सुहाना, मम्मी का वह लोरी सुनाना और प्यार से थपथपाना।

पूरी रात को जागकर गोदी में सुलाकर, इधर - उधर मेरी माँ घूमा करती थी। कभी गुड़िया दिखाकर कभी छनछना दिखाकर बहलाया करती थी।
मम्मी पापा मुझे फिर से छोटी बच्ची बना दो,
मम्मी पापा मुझे फिर से वो लोरी सुना दो,
लौटा दो मुझे मेरा वो बचपन सुहाना,
वो मम्मी का थपथपाना और पापा का झुलाना।

सिया डावर पाँच – अ

स्कूल

सुबह सुबह स्कूल के लिए हलचल

कपड़े हैं इधर - उधर
किताबें हैं यहाँ - वहाँ
जूते पता नहीं कहाँ - कहाँ
हार्न बजा रहा जोर - शोर
गाड़ी चल रही झटके मार आगे - पीछे
सब स्कूल में भाग रहे ऊपर - नीचे

कोई नहीं देख रहा दाएँ - बाएँ
असेम्बली में खड़े हैं सब आस पास
कोई नहीं है अपना - पराया
किसी को पढ़ाई का दुख या सुख

सबका मकसद है
हार या जीत।

अनन्या मेहता 5 ब

सवाल - जवाब

बिना प्रतियोगिता के इस ड्रामा फैस्टिवल के बारे में आपके क्या विचार हैं?

यह एक सुखद अनुभव है। इसमें किसी को कोई स्थान प्राप्त नहीं होता जिससे किसी को बुरा भी नहीं लगता क्योंकि सभी इसके लिए बराबर मेहनत करते हैं।

अशिति, स्टेप बाय स्टेप वर्ल्ड स्कूल

यह एक बहुत अच्छा विचार है और हम प्रतियोगिता के लिए नहीं, आनंद के लिए इकट्ठे हुए हैं।

अन्विता कुमार, मैसोनिक स्कूल

यह अच्छा लग रहा है कि यहाँ हर जगह की तरह एक दूसरे से तुलना नहीं हो रही।

अदा, दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंत विहार

मुझे अच्छा लगा क्योंकि यहाँ हम पुरस्कार के लिए नहीं आए आनंद उठाने आए हैं।

साइशा गुप्ता, श्री राम स्कूल

मैं 'कॉम्पिटिशन' में विश्वास नहीं करती। मुझे लगता है कि प्रतियोगिता से योग्यता की परख नहीं हो पाती।

गुल नयन खुराना, टैगोर इंटरनेशनल स्कूल

यह ड्रामा फैस्टिवल बिना कॉम्पिटिशन के कारण वास्तव में बच्चों को बहुत अच्छा लगता है क्योंकि हम बच्चों पर कम दबाव पड़ता है और साथ साथ हमें भी राहत मिल जाती है।

सुनीता सिंह (अध्यापिका), ब्रिटिश स्कूल

मेरे अनुसार यह एक शानदार विचार है। बच्चे अपने नाटक को बेहतरीन बनाने के लिए काफ़ी मदद करते है जो बहुत अच्छी बात है।

रीटा प्रसाद (अध्यापिका)
दिल्ली पब्लिक स्कूल (वसंत विहार)

बीसवा वसंत वैली स्कूल ड्रामा फैस्टिवल 2011

नाटक की तैयारियाँ कैसी थीं?

हमने बहुत मेहनत की और इसका परिणाम निश्चित रूप से बढ़िया रहा। मुझे बेहद पसंद आया।

दिव्या, ब्रिटिश स्कूल

हमें बहुत मज़ा आया। हमने सभी के विचारों को लेकर एक नाटक तैयार किया।

मनदीप सिंह, रायन इंटरनेशनल स्कूल

बहुत मज़ा आया तथा यह हम सब के लिए एक स्मरणीय अनुभव रहा।

रहमत गुप्ता, सरदार पटेल स्कूल

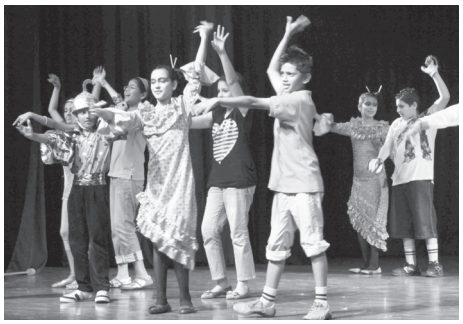

अच्छा लगा, तैयारी के लिए हम स्कूल के बाद रूकते थे, थक भी जाते थे मगर जोश बहुत था।

माया सेन, निर्मल भारती पब्लिक स्कूल

सभी के विचारों को मिलाकर एक नाटक बनाने में बहुत मज़ा आया।

सृष्टि गुप्ता, स्प्रिंगडेल्स इंटरनेशनल स्कूल

मुझे वास्तव में ड्रामा फेस्टिवल की प्रस्तुति बहुत पसंद है जहाँ सभी लोग एक साथ मिलकर नाटक के माध्यम से अपने अदभुत विचार व्यक्त करते हैं।

कशिश सोनी (अध्यापिका), रायन इंटरनेशनल

बेहद मज़ेदार उत्सव होने से बच्चों को बहुत मदद मिली और वह मंच पर भावों को व्यक्त करने के लिए मुक्त थे।

प्रीती सैनी (अध्यापिका)
निर्मल भारती पब्लिक स्कूल

ड्रामा फैस्टिवल - एक अच्छा विचार!

मुझे यह विचार बहुत ही अच्छा व सृजनात्मक लगा। मुझे इसका भगीदार बनने में बहुत प्रसन्नता हुई।

सृष्टि, ब्लू बैल्स स्कूल

यह एक अनोखा व अच्छा विचार है जो कहीं नहीं दिखता।

डिंकी मलिक, न्यू ऐरा पब्लिक स्कूल

यह हम सब के लिए अपनी योग्यता दिखाने का अच्छा मंच है।

अनहिती सिंह, संस्कृति

यह एक बहुत अनोखा विचार है, इसके बारे में सोचने और करने में हमें बहुत मज़ा आया।

पूजा सिंह
एयर फोर्स बाल भारती पब्लिक स्कूल

इस प्रकार बहुत से विद्यार्थी अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर सकते हैं ।

कबीर सिंह, वसंत वैली स्कूल

आपको ड्रामा फैस्टिवल में भाग लेना कैसा लगा ?

मेरा इस महोत्सव में शामिल होने का चौथा साल है और सचमुच बहुत खुशी की बात है। हालांकि

काफ़ी समय बरबाद होता है लेकिन बच्चों को नाटक पेश करने में बहुत उत्साह मिलता है। मुझे ड्रामा फैस्टिवल का हिस्सा होने पर गर्व है।

बिनसी कोमोस (अध्यापिका)
सदार पटेल विद्यालय

साक्षात्कार : निहारिका राय, नित्या डींगरा , सूबिया असद, अमन नायर, मैहर कोहली, गौरी उत्तम, यशोदा जयाल, अमय गुप्ता, सुयश भाटिया, कुबेर मल्होत्रा, अरमान साहिल, आरूषी भूटानी , सुमेर गेवाल और राविया गुप्ता कक्षा पाँच

फिल्म समीक्षा: जिंदगी ना मिलेगी दोबारा

"दिलों में तुम अपनी बेताबियाँ लेकर चल रहें हो, तो जिंदा हो तुम,
नज़र में ख्वाबों की बिजलियाँ लेकर चल रहें हो, तो जिंदा हो तुम..."

उपरिलखित पंक्तियाँ 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' फिल्म में ली गई हैं और यह पंक्तियाँ वास्तव में इस पूरे फिल्म का विशेष अर्थ हमें शहरी द्वारा बता देती हैं। यह सच है कि निर्देशक ज़ोया अख्तर ने फिर से हमारे बॉक्स ऑफिस को एक रोमांचक तथा हिट फिल्म दीं हैं जिसने किसी ना किसी तरह सबके दिलों को छुआ ज़रूर हैं।

इस रोमांचक कहानी की शुरूआत एक बड़ी रोमानी तरीके से हुई जब कबीर (अभय देओल), नताशा (कल्की कोचलिन) से शादी के लिए उसका हाथ मांग रहा है, परंतु शादी से पहले वह अपने दोस्तों इमरान (फरहान अख्तर) और अर्जुन (रितिक रोशन) के साथ स्पेन घूमने जाना चाहता है। उनकी सफ़र की शुरूआत बहुत अच्छे से नहीं होती क्योंकि अर्जुन अपनी काम से छुटकारा नहीं पा पाता। कहानी के आगे बढ़ने पर उनकी मुलाकात एक खूबसूरत डाइविंग प्रशिक्षक, लैला (कटरीना कैफ) से होती हैं जो उनके साथ कुछ दिन और बिताती हैं। उनकी यात्रा अंत में उनकी ज़िंदगियाँ बदल देती हैं और उन्हें ज़िंदगी के बारे में कुछ सिखाती हैं।

अभिनेताओं का दमदार अभिनय और स्पेन की खूबसूरत सड़कों ने इस फिल्म की शोभा बड़ा दी।

निर्देशक ज़ोया अख्तर और इस फिल्म के अभिनेताओं ने इस फिल्म के द्वारा दर्शकों को एक ऐसा संदेश दिया कि हमें अपनी ज़िंदगी पूर्णता से जीनी चाहिए और ज़िंदगी का हर एक मिनट कितना कीमती हैं। एक और ज़रूरी संदेश जो उन्होंने हम तक पहुँचाया था कि यदि हम अपने जीवन से संतुष्ट है और सुखी हैं तभी हम दूसरों को खुश कर सकते हैं। इस फिल्म ने हमे ज़िंदगी की असली मूल्यों के बारे में भी सिखाया है।

इस फिल्म में वह तीन ज़िंदगी बदलने वाले रोमांच को देखकर-डीप सी डायविंग स्काई डायविंग और बैलों से भागना- मेरा भी दिल किया कि मैं वह करूँ और अपने डरों को खत्म कर दूँ और पूरी तरह से निडर बन जाऊँ। इस फिल्म की शोभा और बढ़ गई थी जब फरहान,रितिक और अभय ने अपने गाये हुए 'सैनोरीटा' पर जमकर नाचा। मेरा सबसे मनपसंद हिस्सा वह था जब वह तीन अपने सफ़र के अंतिम दिन पर बैठकर 'दूरदर्शन' के थीम सोंग गा रहे थे!

यह फिल्म सरासर मज़ेदार हैं और आप यह जानने के लिए बेताब रहोगे कि आगे क्या होता हैं। 'जिंदगी ना मिलेगी दोबारा' एक ऐसी फिल्म हैं जो आप ज़रूर दोबारा देखना चाहेगें!

तराना गुप्ता 9

ईद

ईद-उल-फितर का त्योहार पूरे विश्व के मुसलमान बहुत हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यह एक महीने के उपवास, जिसे रोज़ा कहते हैं, के बाद आता है। रमज़ान के महीने में सूर्योदय से सूर्यास्त तक, लोग कुछ भी खाते-पीते नहीं हैं। इसी महीने के उपवास के बाद, अगले महीने शव्वल के पहले दिन को ईद मनाई जाती है।

इस त्योहार के लिए बाज़ार सजाये जाते हैं। लोग खरीददारी करते हैं-सभी घरवालों के लिए नए-नए कपड़े व मिठाईयाँ इस दिन की रौनक को और भी बढ़ा देता हैं। सभी महिलाएँ व लड़कियाँ मेहंदी लगाती हैं और सुंदर-सुंदर आभूषण व चूड़ियाँ पहनती हैं। सुबह-सुबह उठकर लोग जल्दी से तैयार हो जाते हैं। फिर सब लोग एक-दूसरे के गले मिलकर ईद मुबारक कहते हैं। यह आपको ईद के दिन चारों तरफ सुनाई देगा। सभी घरों में सेंवई की खीर बनती है। इसके साथ दूध तथा मेवा भी परोसते हैं। बच्चे-बूढ़े सभी इसे काफी शौक से खाते हैं।

सब लोग साथ में एक झुंड बनाकर मस्जिद जातें हैं। मस्जिद पहुँचकर वहाँ सब लोग नमाज़ पढ़ते हैं। सभी बच्चे अपने से बड़ों को सलाम करते हैं व उनसे ईदी पाकर बहुत खुश हो जाते है। लोगों को पता भी नहीं चलता कि यह दिन कैसे बीत जाता है और बहुत ही राज़ी-खुशी से यह त्योहार मनाया जाता है।

संजरी कलंतरी

इच्छा है बहुत कुछ करने की

हमें यह दस चीज़े जरूर करनी चाहिए और मुझे भी यह दस चीजे करनी हैं। पहले मुझे सातों महाद्वीपों पर अपना पैर रखना है। मुझे इस दुनिया की हर जगह देखनी हैं। अंटारकटिका जाना मुश्किल होगा लेकिन मुझे वहाँ फिर भी जाना है।

दुसरा मुझे वहेल शॉर्क के साथ तैरना है। यह बहुत डरावना तो जरूर होगा लेकिन यह करने में बहुत मज़ा आएगा।

तीसरा मुझे 'गरेट बारियर रीफ' में स्कूबा डाइविंग करनी है। यह दुनिया का सबसे बड़ा कौरल रीफ हैं और यह दुनिया का सबसे अनोखा पानी से सम्बंधित वातावरण है।

चौथा मुझे एक सजीव ज्वालामुखी को अपने आँखों के सामने देखना है। यह दृश्य कितना सुंदर होगा।

पाँचवा मुझे 'नार्थ पोल' और 'साउथ पोल' पर खड़ा होना है।

मुझे यूरोप में हर देश की राजधानी देखनी है। यूरोप एक बहुत ही सुदंर महाद्वीप है और यहाँ बहुत सुंदर कारीगिरी है।

सातवां मुझे 'स्काय डाईविंग' करनी है। मुझे आसमान से धरती का दृश्य देखना है। आठवाँ मुझे एक देश से दूसरे देश साइकिल पर जाना है। मुश्किल होगा लेकिन मुझे कोशिश जरूर करनी है।

मुझे इजिप्ट के 'ग्रेट पिरामिड' पर चढना है। आखिर में मुझे आरटिक सागर में तैरना है।

मरने से पहले मुझे यह सब कुछ करना है क्योंकि जीवन एक ही बार मिलता है और मुझे इसका भरपूर मजा लेना है।

मिताली मेहता 9

संपादक मंडल

अनन्या जैन, आकांक्षा जाधव, इंद्रनील रॉय, तारिनी सरदेसाई, आस्था कामरा, भरत सोमनाथन, नम्रता नरूला, पिया कोचर, शरन्या ठाकुर, वसुधा दीक्षित, अखिला खन्ना, अमीरा सिंह, ईशान सरदेसाई, ऋषभ प्रकाश, वंदिता खन्ना, राम्या आहूजा, सुवीरा चड्ढा, वानी श्रीया, वेदिका वेरी

संपादकः मल्लिका पाल